

घटता भू-जल चिंतनीय पर जल संचयन नामुम्किन तो नहीं

समीक्षा एवं सुझाव

भू-जल स्तर निरंतर तेजी से गिरता जा रहा है; चिंताजनक बात यह है कि इस विकट समस्या से निपटने के लिए अब तक हमने कोई भी ठोस समाधान नहीं ढूँढा है ! यह एक अकाट्य सत्य है कि अगर यह जल स्तर यूँ ही गिरता रहा तो आने वाले समय में पीने के लिए भी पानी उपलब्ध नहीं होगा ! तेजी से नीचे गहराई में उतरते भूजल स्तर के कारण जो नलकूप दो से ढाई हजार LPM पानी देते थे वह आज बमुश्किल 600 से 700 LPM पानी ही दे पा रहे हैं ! यही नहीं हर साल दर्जनों हैण्डपंप बेकार भी हो जाते हैं ! यह समस्या चिंतनीय अवश्य है पर इसका समाधान नामुम्किन नहीं है! अगर हम पूरे भारत की बात करें तो भारतीय केंद्रीय जल आयोग द्वारा बीते वर्ष यानि 2014 में जारी किये गये आकड़ों के अनुसार देश के अधिकांश बड़े जलाशयों का जलस्तर वर्ष 2013 के मुकाबले घटता हुआ पाया गया था !

वर्षा जलसंचयन – सबके लिए निराशा

पर्यावरणविदों का मानना है कि वर्षा जल संचयन के जो स्ट्रक्चर बनाये गए हैं उनका रख रखाव बड़ी चुनौती है ! देखने में आया है कि इनका न तो उचित रख रखाव ही किया जाता है और न ही यह देखा जाता है कि पानी उनसे रीचार्ज भी हो रहा है या नहीं ! जरूरी था कि बारिश से पहले इन सभी संयंत्रों की मरम्मत करा करके साफ सफाई कर ली गई होती; किन्तु ऐसा हम नहीं कर पाए !

वर्षा :जल भराव – शहरके लिए हताशा

जहाँ एक तरफ हम वर्षा के जल का संचय नहीं कर पा रहे हैं वहीं दूसरी तरफ उसी वर्षा के जल भराव से पूरा का पूरा शहर अस्त व्यस्त हो रहा है यह मात्र इस वर्ष की बात नहीं है प्रत्येक वर्ष यही दशा होती है पर हम मानसून को विदा कर सारी समस्या भूल जाते हैं भूलने की हमारी आदत में कब परिवर्तन आएगा !

जल दोहन

जल दोहन की समस्या भी विकराल रूप ले चुकी है ! भूमिगत जल स्रोतों से अंधाधुंध दोहन लगातार जारी है ! आलम यह है कि भूमिगत जल भंडारों से निकाले गए पानी का एक तरफ तो बड़े पैमाने पर ब्यापार जारी है वहीं दूसरी तरफ सरकारी नलकूप व हैण्ड पम्पों के पहुँच से पानी छूटा जा रहा है और जो लोग पानी की जरूरत के लिये सरकारी नलों पर निर्भर हैं उन्हें तो एक एक बाल्टी पानी के लिए तरसना पड रहा है !

वर्षा जल संचयन हो या भूमिगत जल दोहन पर्यावरण से जुडी यह दोनों ही बातें नीति नियोजकों के लिए बेमानी लगती हैं ! खास बात यह है की आमजन हो या शासन और सत्ता में बैठे उच्चाधिकारी, दिनों दिन गंभीर होती समस्या से वाकिफ तो हैं, लेकिन हल तलाशने के नाम पर सभी असफल ही रहे हैं !

जल – स्तर को बढ़ाने के लिए सुझाव:

बरसात के पानी सरक्षण के लिए उसके माध्यमों को दृढ इच्छा शक्ति के साथ विकसित करने की जरूरत है ! सरकार के साथ साथ प्रत्येक व्यक्ति को भी जागरूक होना पड़ेगा यह प्रत्येक नागरिक का भी दायित्व है ! अभी स्थिति ये है की समुचित सरक्षण माध्यमों के आभाव में वर्षा का बहुत ज्यादा जल, जो लोगों की तमाम जल जरूरतों को पूरा करने में काम आ सकता है, खराब और बर्बाद हो जाता है !

घरों के आस-पास कूएं आदि की व्यवस्था हो जाये, तो वर्षा जल का समुचित सरक्षण हो सकेगा ! जल सरक्षण की यह व्यवस्थाएं हमारे पुरातन समाज में थीं, पर विडम्बना यह है कि आज हम आधुनिक हो गए हैं और हम उन व्यवस्थाओं को लेकर बहुत गंभीर नहीं हैं ! प्रत्येक व्यक्ति को जल के प्रयोग और जल संरक्षण के प्रति अपने सोच में बदलाव लाना होगा ! इसके लिए अनवरत जागरूकता कार्यक्रम चलाने की भी आवश्यकता है !

उपरोक्त बिन्दुओं को मद्दे नजर रखते हुए कुछ सुझाव नीचे दिए जा रहे हैं; जिनका युद्ध स्तर पर निष्ठा से पालन ही समस्या के समाधान को बल प्रदान कर सकता है:

1. पुराने तालाबों को चिन्हित कर उनकी खुदाई करा कर उन्हें जीवित किये जायें ! इनके रख रखाव की जिम्मेदारी ग्राम पंचायत और वहां के नागरिकों को सुपुर्द किया जाये !
2. शहरी क्षेत्रों में जितने पार्क हों उनमें सलग्न चित्रानुसार चारों कोनों पर कच्चे कूएं खुदवाए जाएँ ! इनके रख - रखाव की जिम्मेदारी मोहल्ला समितियों तथा स्थानीय सभासदों को सौंपी जाएँ ! समय समय पर निगरानी करने का जिम्मा सम्बंधित नगर निगम का हो !
3. नालियों तथा सीवर के जल को भी प्रोसेसिंग करने के पश्चात् नदियों के बजाय बड़े बड़े नालों के माध्यम से ऐसी ही कच्चे कूओं में/खेतों में / तालाबों में ले जाने की व्यवस्था की जाये !
4. भूजल के अलग अलग उपयोग के आधार पर सख्ती से जलकर की वसूली की जाये !
5. जलदोहन करने वालों को सख्त चेतावनी के पश्चात् यदि पाया जाये तो सख्ती से जुर्माना वसूला जाये !
6. वर्षा जल संचयन तथा भूमिगत जल दोहन दोनों के रख रखाव के लिए PPP फार्मूला के तहत अलग अलग समितियां बने और उसके अनुसार जिम्मेदारियां देते हुए जवाबदेही निर्धारित की जाये !

Arunendra Kumar Srivastava